डॉ. अर्जुन चव्हाण
(एम.ए., बी.एड., पीएच.डी.)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416004

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि "डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के 'देवीना' उपन्यास का अनुशीलन" लघु शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 8 APR 2008

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)

डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा
एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.
प्राचार्य, मुधोजी महाविद्यालय,
फलटण, जि. सातारा.
(महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री. जितेंद्र वामन बनसोडे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के 'देवीना' उपन्यास का अनुशीलन" मेरे मार्गदर्शन में पूरा किया है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविद्यालय में किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : फलटण

तिथि : 8 APR 2008

शोध-निर्देशक

(प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शहा)

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि श्री बनसोडे जितेंद्र वामन का 'डॉ लक्ष्मीनारायण लाल के देवीना उपन्यास का अनुशीलन' यह लघु शोध प्रबंध एम. फिल. (हिंदी) के परीक्षणार्थ सादर अग्रेषित।

स्थान : सातारा

तिथि : 8 APR 2008

डॉ. सगरे बी.डी.
हिंदी विभाग प्रमुख
लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा (महाराष्ट्र)

डॉ. सुहास साळुंखे
प्राचार्य
लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा (महाराष्ट्र)

LAL BAHADUR SHASTRI COLLEGE SATARA

प्रख्यापन

"डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के 'देवीना' उपन्यास का अनुशीलन" यह शोध-प्रबंध मेरी सर्वथा मौलिक रचना है। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही हैं। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविद्यालय में किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : सातारा

तिथि : 8 APR 2008

शोध-छात्र

(श्री बनसोडे जितेंद्र वामन)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल हिंदी साहित्य के एक अष्टपैलु व्यक्तित्व माने जाते हैं। समस्त हिंदी संसार उन्हें एक सफल नाटककार के रूप में जानता है, लेकिन एक नाटककार के साथ-साथ वे एक सफल कथाकार भी माने जाते हैं। प्रस्तुत 'देवीना' उपन्यास उनका एक सुप्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है। लाल ने 'देवीना' उपन्यास में नारी नारी को सबला रूप में तथा युग परिवर्तनकारी रूप में चित्रित किया है। उनके उपन्यास की नायिका प्राचीन परंपरागत बंधनों को तोड़कर अपना खुदका अलग अस्तित्व स्थापित करती है। तथा पुरुष की अन्यायी, अत्याचारी दमन नीति का कड़ा विरोध करते हुए अपने आत्मविश्वास से स्वयं की कर्मभूमि निर्माण करती है। अतः समस्त नारी जाती को अपना आत्मसन्मान जागृत करने की दृष्टि से यह विषय महत्वपूर्ण है।

प्रेरणा

छात्र जीवन से ही मुझे हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं का अध्ययन करना बड़ा मनोहारी लगता था। इस अध्ययन में लक्ष्मीनारायण लालजी ने मुझे काफी प्रभावित किया था। अतः तबसे डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के समूचे व्यक्तित्व तथा कृतित्व को जानने की जिज्ञासा मेरे मन में निर्माण हुई थी। इस जिज्ञासा को फलित करने का मार्ग आदरणीय गुरुवर्य डॉ. शहा सर जी ने सुकर किया। उनसे ही मुझे एम.फिल. करने की प्रेरणा मिली। अतः आप ही की प्रेरणा की बदौलत मैंने मघु शोध-कार्य के लिए 'डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के 'देवीना' उपन्यास का अनुशीलन' इस विषय का चयन किया।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में कुछ प्रश्न खडे हुए थे, वे इस प्रकार है -

१. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल सर्व परिचित नाटककार है, वे उपन्यासकार कैसे बने?

२. 'देवीना' उपन्यास का मूल उद्देश्य क्या होगा?

३. प्रेम और आत्मरति में कौन-सी सूक्ष्म विभाजन रेखा है?

४. 'देवीना' उपन्यास की प्रतिभात्मक शैली में लिखी कथावस्तु कैसी होगी?

५. 'देवीना' उपन्यास की विषय पृष्ठभूमि कौन-सी है।

६. प्राचीन प्रेमगाथा दुष्यंत-शकुंतला को आधुनिकता के साथ चित्रित करने का प्रयोजन क्या होगा?

७. 'देवीना' उपन्यास में लालजी ने नारी को कितना महत्व दिया है?

८. प्रस्तुत उपन्यास में प्रेम-चित्रण को प्रमुखता देने का क्या उद्‌देश होगा?

९. डॉ. लाल के उपन्यासों का प्रतिपाद्‌य क्या होगा?

अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मुझे मिले है उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को छह अध्यायों में विभाजित करके अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय - प्रस्तुत प्रबंध के प्रथम अध्याय में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया है।

द्‌वितीय अध्याय - प्रस्तुत प्रबंध के द्‌वितीय अध्याय में 'देवीना' उपन्यास की पृष्ठभूमि और कथावस्तु का विवेचन किया है।

तृतीय अध्याय - प्रस्तुत प्रबंध के तृतीय अध्याय में 'देवीना' उपन्यास के पात्रों का चरित्र - चित्रण किया है।

चतुर्थ अध्याय - प्रस्तुत प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में 'देवीना' उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया है।

पंचम अध्याय - प्रस्तुत प्रबंध के पंचम अध्याय में 'देवीना' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन का विवेचन किया है।

षष्ठम अध्याय - प्रस्तुत प्रबंध के षष्ठम अध्याय में प्रबंध के उपसंहार का विवेचन किया है।

प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी है, इसमें आधार ग्रंथ सूची तथा संदर्भग्रंथ सूची दी है।

ऋण निर्देष

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता करने वाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए आदरणीय गुरुवर्य प्राचार्य डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा सर जी मार्गदर्शक रूप में मिले। इसमें मैं अपना परम भाग्य समझता हूँ। अनगिनत महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी आपने जिस आत्मीयता से मुझे मार्गदर्शन दिया, मेरी असंख्य गलतियों को सुधारा, इसके लिए मैं आपके प्रति अतीव कृतज्ञ हूँ। सत प्रेरणा, सत परामर्श एवं प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है। यदि आप बार-बार सजग ना करते तो शायद यह लघु शोध-प्रबंध अधूरा रह जाता। आपके शांत, गंभीर व्यक्तित्व एवं स्नेहल भाव के कारण यह प्रबंध पूर्ण हो सका। अतः इस गुरु-ऋण से मैं आजीवन मुक्त नहीं हो सकता।

प्रस्तुत शोध-कार्य के लिए संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले मुधोजी महाविद्यालय फलटण के ग्रंथपाल, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथपाल तथा बॅरिस्टर बालासाहेब खर्डेकर, कोल्हापुर के ग्रंथपाल जिनका मैं हृदय से आभारी हूँ। साथ ही प्रस्तुत शोध-प्रबंध का टंकन सुचारू ढंग से करने वाली सौ. प्रीति पराग शाह उनका भी मैं आभारी हूँ।

इस शोध-प्रबंध की पूर्णता होने पर जिन्हें असीम आनंद होने वाला था, जो हर पल ईश्वर से मेरे प्रबंध की पूर्णता की दुहाई माँगते थे ऐसे मेरे पूज्य पिताजी वामन रामा बनसोडे आज इस दुनिया में नहीं है, लेकिन वो आज न होते हुए उनकी स्मृति ने मुझे हर पल कार्यान्वित रथा ऐसे महान करूणासागर मेरे पिताजी के प्रति मैं तहे दिल से कृतज्ञ हूँ।

अंत में मेरे सभी हित चिंतकों के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ विद्वानों के सामने प्रस्तुत करता हूँ।

स्थान - सातारा
दि. - 8 APR 2008

अनुसंधाता
(श्री बनसोडे जितेंद्र वामन)